

Inhalt

| | |
|---|-----|
| Einleitung | |
| Warum ein systematischer Kommentar? | 7 |
| Kapitel 1 | |
| Das Gut des Menschen (Buch I.1–13) | 23 |
| Kapitel 2 | |
| Der Begriff der Tugend (Buch II.1–9) | 61 |
| Kapitel 3 | |
| Handlung und Charakter (Buch III.1–8) | 84 |
| Kapitel 4 | |
| Die Ethischen Tugenden (Buch III.9–15 und IV. 1–15) | 108 |
| Kapitel 5 | |
| Die Tugend der Gerechtigkeit (Buch v. 1–14) | 133 |
| Kapitel 6 | |
| Die Verstandestugenden (Buch VI.1–13) | 157 |
| Kapitel 7 | |
| Unbeherrschtheit und die Ursachen der Lust (Buch VII.1–15) | 184 |
| Kapitel 8 | |
| Freundschaft (Bücher VIII.1–16 und IX.1–12) | 223 |
| Kapitel 9 | |
| Die höchste Lust des Menschen (Buch X.1–10) | 269 |
| Verzeichnis der verwendeten Siglen | 307 |
| Ausgewählte Literatur | 308 |
| Danksagung | 323 |